ध्येय IAS®

most trusted since 2003

Updated 2019

इतिहास

(सामान्य अध्ययन)

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

(मूर्तिकला)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) :	A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR :	25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR :	1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY :	28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ :	IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE :	A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE:	CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR :	OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad	9879113469/8000162499	Jodhpur	9529989199/9928965998
Aligarh	9837877879	Jalandhar	9888777887
Azamgarh	7617077051	Kanpur	7275613962
Bahraich	7275758422	Kurukshetra	8950728524
Bareilly	9917500098	Lucknow Alambagh	7518373333
Chandhigarh	8146199399/9050888338	Ludhiana	9876218943/9888178344
Faridabad	9711394350	Moradabad	9927622221
Gorakhpur	7080847474	Patiala	9041030070
Gwalior	9893481642	Patna	9334100961
Haldwani	8077728957/7060172525	Rewa	9926207755
Hisar	9996887708	Varanasi	7408098888
Jabalpur	8982082023		

● भारतीय मूर्तिकला / प्रतिमाशास्त्र ●

- हड़प्पाकालीन
- मौर्य कालीन
- मौर्योत्तर
- गुप्त-गुप्तोत्तर (Classical period)
- विशेष मूर्तियों का अध्ययन → शिव, कृष्ण, बुद्ध

अन्य कलाओं की भाँति भारत की मूर्तिकला अत्यंत समृद्ध कला है। हमारे यहां पाषाण काल से ही प्रतिमाओं का निर्माण प्रारम्भ हो गया था हालांकि ईसवी सन् की शताब्दियों में इसका विशेष विकास हुआ। मूर्ति निर्माण भारतीय सांस्कृतिक जीवन का विशेष पक्ष बना फलतः देश भर में अनेक धार्मिक मूर्तियों तथा गैर धार्मिक मूर्तियों का निर्माण होता रहा।

▸ सैन्धव घाटी की मूर्तिकला

हड़प्पाई कला कौशल में काफी निपुण थे। उन्होंने अनेक प्रतिमाओं का निर्माण किया।

- **पाषाण मूर्तियाँ**
  - हड़प्पा वासियों ने विभिन्न प्रकार के प्रस्तर मूर्तियों का निर्माण किया।
  - मोहनजोदड़ो - योगी
  - हड़प्पा → लालबलुआ पत्थर, काला स्लेटी पत्थर
- **धातु की मूर्तियां**
  - जानवर
  - मानव मूर्तियां
  - मोहनजोदड़ो की कांसे की नर्तकी (द्रवी भौम विधि से ढालकर)
- **मृण मूर्तियाँ**
  - जानवर, पशु-पक्षी
  - खिलौने
  - मानव - मातृदेवी

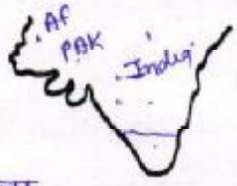

▸ मौर्यकालीन मूर्तिकला (323 - 186 BC)

- **राजकीय कला**
  - महल [चन्द्रगुप्त] → पाटलीपुत्र, 80 स्तंभ, खुदाई से निचला हुंड मिला है
  - स्तूप [84000 अशोक]
  - गुफाएं [बराबर, नागार्जुनी]
  - अशोक के स्तंभ
- **लोककला**
  - यक्ष/यक्षिणी प्रतिमा
  - धौली का हाथी (Orrisa)
  - मृण्मूर्तियां

• अशोक का स्तंभ : शिल्प एवं मूर्तियां

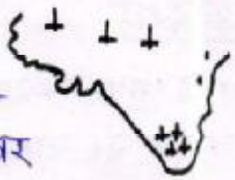

सांची, सारनाथ, लौरिया नन्दनगढ, लौरिया-अरेराज, रामपुरवा, फरूखाबाद जतिंगरामेश्वर मेरीगुडी

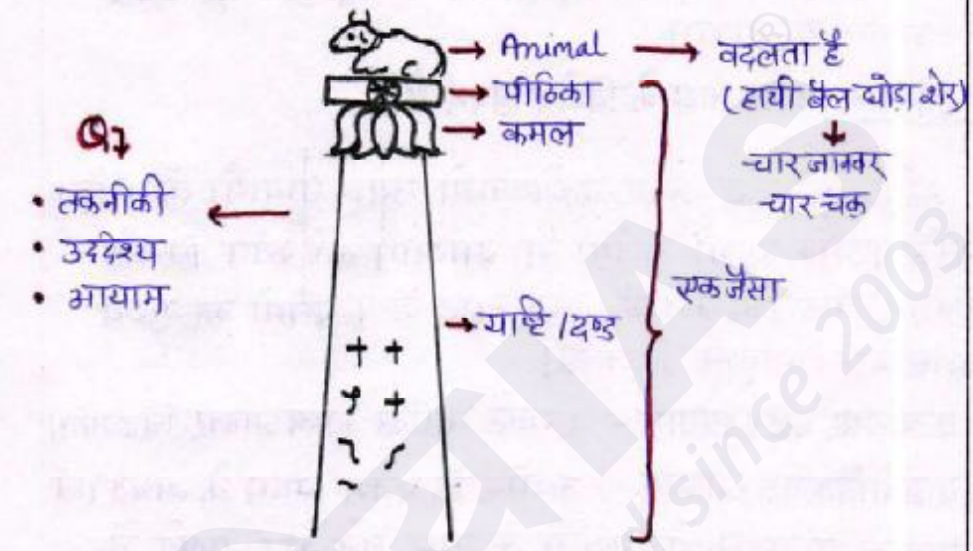

तकनीकी पक्ष

1. अशोक के स्तम्भ एकाश्म (monolithic) स्तंभ है। सम्पूर्ण स्तम्भ को पहाड़ी से सीधे काटकर निकाला गया है। इसमे कही भी जोड़ नही है।
2. स्तंभो के शीर्ष पर चूले / चूड़ी काटकर कमल पुष्प एवं जानवर को स्तंभो के साथ जोड़ा गया है सम्पूर्ण स्तंभ नीचे से ऊपर की तरफ पतला होता जाता है। इन्हे चुनार के बलुआ पत्थर से बनाया गया।
3. अशोक के स्तंभों पर मौर्यकालीन चमकदार पालिश की गई है इनका रासायनिक गुण इतना बेहतर है कि आज भी इनकी चमक बरकरार है।

उद्देश्य-

1. धम्म नीति का प्रसार करना
2. जनता से सम्वाद कायम करना
3. राजनीतिक वैभव एवं शक्ति का प्रदर्शन
4. अपने नीतियों को इन स्तंभो के माध्यम से चीर स्थाई बनाना चाहता था।

आयाम (सारनाथ के विशेष संदर्भ में)

अशोक के स्तंभ अनेक विशेषताओ तथा आयामों को प्रदर्शित करते है। उसके सभी स्तंभों में सारनाथ का स्तंभ जिसमे शीर्षपर चार सिंह बने है सर्वोत्कृष्ट है। स्तंभो की मुख्य विशेषताएं / आयाम निम्न है।

1 **कलात्मक पक्ष / आयाम -** (घण्टी पीठिका कमल जानवर चित्र सहित)

2. **राजनीतिक पक्ष / आयाम -** अशोक के स्तंभ राज्य के शक्ति एवं वैभव के भी प्रतिक थे स्तंभो के उपर बने शेर शक्ति के प्रतीक है तथा देश के रक्षक के रूप में दिखलाए गए है। यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा इसे राजकीय चिह्न के रूप मे अपनाया गया है।

3. **दार्शनिक-सांस्कृतिक आयाम -** अशोक के स्तंभ बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद के सिद्धान्त को भी प्रदर्शित करते है। जिसके तहत माना गया है कि कुछ भी स्थायी नही है। हर चीज गतिमान है। पीठिका पर चार जानवर (बैल हाथी शेर घोड़ा) तथा चार चक्र बने है। ये सभी चक्र एवं जानवर गतिशील रूप में दर्शाए गए है। स्तंभो पर उत्कीर्ण पशु सामाजिक सौहार्द एवं शान्ति के भी प्रतीक है।

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything
in this margin)

अशोक के स्तंभों (मौर्यकला) पर विदेशी प्रभाव संबंधी बहस

मौर्यकला विदेशी प्रभाव से उत्पन्न

मौर्यकला स्वदेशी कला का उदाहरण है।

निष्कर्ष

मौर्यों ने अनेक कलाकृतियों का निर्माण कराया जिसमे महल स्तंभ स्तूप एवं गुफाएं आदि मुख्य थी। मौर्यों की भाँति पारसी साम्राज्य में भी अनेक कलाकृतियों का निर्माण हुआ। वहां भी मौर्यों जैसे स्तंभों का निर्माण किया गया। अतः कला मे अनेक विद्वान मौर्य कला पर ईरानी प्रभाव मानते है। जबकि विद्वानो का एक दुसरा वर्ग ऐसा नही मानता है। अतः इसका विश्लेषण प्रासंगिक है।

अनेक विद्वान मौर्यकला पर ईरानी कला का प्रभाव मानते है। उनका तर्क है कि -

1. ईरानियो ने मौर्यो से पहले अपनी राजधानी सूसा एवं एकबत में महलों एवं स्तंभो का निर्माण कराया। कालक्रम उनका निर्माण पूर्व मे हुआ अतः विसरण (Diffusion) द्वारा इनका प्रसार मौर्य साम्राज्य मे हुआ।
2. मौर्य स्तंभो पर जो कमल जैसी आकृति है वह घंटा है ऐसा ईरानी स्तंभो पर बना है।
3. मौर्य स्तंभो की भांति ईरानी स्तंभो के शीर्ष पर भी मूर्तिया बनी है।

विद्वानों का एक दुसरा वर्ग मौर्यकला को स्वदेशी कला मानता है तथा विदेशी प्रभाव से इनकार करता है। इनका तर्क है कि -

1. ईरानी स्तम्भ कई टुकड़ों मे जोड़कर बने है जिसमें वासुरी छिद्र दिखता है। साथ ही ये स्वतंत्र नही है बल्कि भवनों के साथ बने है। लेकिन मौर्य स्तंभ खुले मे बने है। तथा इनमें कही भी जोड नही है बल्कि ये एकाश्म है। अतः दोनों मे काफी अन्तर है।

2. मौर्य स्तंभ के ऊपर घण्टा न होकर कमल आकृति है जो भारत का महत्वपूर्ण मांगलिक चिह्न है।

3. मौर्य स्तंभो पर बने जानवर बैल हाथी शेर घोड़ा - भारतीय परम्परा के है जिनकी प्राचीनता हड़प्पा काल तक है। अतः ये स्वदेशी प्रभाव से बने है विदेशी नही।

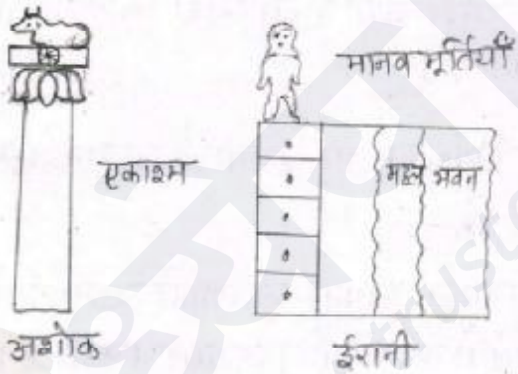

विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करने के बाद कहा जा सकता है कि मौर्यकला पर विदेशी प्रभाव सांस्कृतिक लेन देन के रूप मे रहा होगा न कि अंधाधुन नकल के रूप में। मौर्य कलाएं भारतीय शिल्पीयो की कौशल एवं दक्षता का परिणाम है। जिनपर स्वदेशीपन अधिक प्रबल है।

मौर्योत्तर कालीन मूर्तिकला (200 BC - 300 AD)

- मूर्तिकला / मूर्ति निर्माण की दृष्टि से यह क्लासिकल कला है।
- देशभर में प्रतिमा निर्माण की लहर पैदा हुई।
- प्रतिमा निर्माण मुख्यत: तीन केंद्रों पर हुआ।

गांधार — मथुरा — अमरावती

केवल मूर्तियाँ ही नहीं कला के विविध रूपों - चैत्य विहार स्तूप मंदिर चित्रकला नृत्य संगीत का व्यापक विकास हुआ।

कारण ?- धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक

मौर्योत्तर काल कला के विविध रूप रंगो एवं शैलियो के विकास का अद्भुत काल था। इस काल में कला के अनेकानेक रूप रंगों का विकास हुआ। इस विकास के पीछे अनेक कारण उत्तरदायी थे।

1- **धार्मिक-दार्शनिक** - भक्ति का उद्भव एवं कलाओं का विकास

2- **सामाजिक कारण** - इस काल में अनेक विदेशियों का भारत आगमन हुआ जो भारतीय समाज के साथ स्थायी रूप से जुड़ गये। इस जुड़ाव को दर्शाने के लिए उनके द्वारा कलाओं के विकास पर बल दिया गया। समाज के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा सामूहिक दान दिया गया। फलत: कलाओं के विकास को बढ़ावा मिला।

3. **आर्थिक कारण** - यह आर्थिक समृद्धि का काल था। कृषि, व्यापार वाणिज्य हर क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। विदेशी व्यापार- रोम दक्षिण-पूर्वी एशिया चीन मध्य एशिया आदि से भारत इस

समय काफी लाभ कमाता था। फलतः आर्थिक समृद्धि ने कलाओं के निवेश को प्रोत्साहित किया।

५- राजनीतिक कारण - इस काल में देशी (शुंग सातवाहन खारवेल आदि) एवं विदेशी (यूनानी शक कुषाण) सभी शासकों ने कलाओं के विकास को प्रोत्साहित किया एवं संरक्षण दिया इससे कलाओं की प्रगति हुई।

❶ गांधार कला

AF	PAK
गांधार	तक्षशिला
बामियान	पेशावर
शाहजी की ढेरी	स्वातघाटी

- समयकाल
- निर्माण सामग्री
- विषय → धार्मिक, धर्मनिरपेक्ष
- मुख्य विशेषता

गांधार मूर्तिकला का विकास आज के अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के क्षेत्रों में लगभग (100 BC - 500 AD) तक हुआ।

इस कला के मुख्य केन्द्र - गांधार, बामियान, चरसठा अमियोर शाहजी की ढेरी, तख्तेवाही तक्षशिला पेशावर स्वातघाटी आदि हैं।

मूर्ति निर्माण सामग्री - गांधार मूर्तियों का निर्माण नीला धूसर शिष्ट पत्थर, चूनाप्लास्टर, गचकारी (Stucco) तथा कहीं-२ धातु के प्रयोग से किया गया है।

विषय गांधार में धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष दोनों विषयों की प्रतिमाएं बनी हैं।

धार्मिक

a. यूनानी रोमन देवी देवता - हेलेना अपोलो तथा हेराक्लिज जैसे यूनानी रोमन देवी देवताओं की मूर्तियां बनाई गई हैं।

प्रश्न संख्या Question No.

ध्येय IAS most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें (Dont write anything in this margin)

b. स्थानीय देवी देवता - स्थानीय देवी देवताओं को भी प्रतिमाशास्त्र में स्थान दिया गया है। इसमें यक्ष-यक्षिणी (उर्वरता की प्रतीक) कुबेर (धनधान्य के देवता/समृद्धि) हरिती उर्वरता की प्रतीक, बच्ची से घिरी हुई) तथा सुखावती (स्वर्ग की देवी) आदि मुख्य है।

c. बुद्ध एवं बोधिसत्व - गांधार कला में बुद्ध एवं बोधिसत्व को विशेष महत्व दिया गया है। बौद्ध प्रतिमाओं की प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण निम्न है।

1. गांधार में बुद्ध एवं बोधिसत्व को वास्तविक मनुष्य की भांति दिखलाया गया है अतः इन्हे यथार्थवादी बुद्ध भी कहा जाता है।
2. बुद्ध एवं बोधिसत्व प्रतिमाओं में दाढ़ी एवं मुछे बनी है उनके बाल घुंघराले है तथा पैरो में कही-2 सैंडल दिखाया गया है।
3. बुद्ध के वस्त्र रोमन टोगा (चोला) जैसे लटके हुए बने है।
4. मूर्तियों के पिछे का आभामण्डल सादा है उस पर अलंकरण का अभाव है। उसमे आध्यात्मिक भाव नही है।
5. बुद्ध की मूर्तिया अधिकांशतः प्रस्तर (पत्थर) से बनी है। कही-कही धातु का प्रयोग है।
6. गांधार मे बुद्ध की खड़ी एवं बैठी दोनो प्रतिमाएं विभिन्न मुद्राओ - भूमिस्पर्श, ध्यान धर्मचक्र प्रवर्तन अभय आदि से बनी है।

▸ गांधार मूर्तिकला पर प्रभाव

गांधार प्रतिमाओं पर अनेक प्रभाव है यहां की बुद्ध प्रतिमाओ पर भारतीय मध्य एशियाई तथा यूनानी रोमन परम्परा का प्रभाव दिखाई देता है।

गांधार कला पर यूनानी-रोमन प्रभाव अधिक है बुद्ध एवं बोधिसत्व मूर्तियों पर यूनानी-रोमन प्रभाव अधिक स्पष्ट है यूनानी प्रभाव के तहत बौद्ध प्रतिमाओं में घुंघराले बाल दाढ़ी, मुंछे, पैरो मे सैण्डल, सिर के पिछे भामामण्डल तथा मानव जैसा शारीरिक रूप दर्शाया गया है।

गांधार मूर्तियों पर रोम का प्रभाव उतना ही है जैसा कि यूनान का है। विशेष रूप से मूर्तियों का अलंकरण एवं सजावट रोम से प्रभावित है। जिस प्रकार रोम मे लटके हुए वस्त्र (रोमन टोगा / चोला) पहनने की परम्परा थी उसी प्रकार गांधार मूर्तियो के वस्त्र लटके हुए दिखाए गए है। शारीरिक आभूषणो एवं साज-सज्जा पर भी रोमन प्रभाव अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि गांधार मूर्तिकला यूनान तथा रोम दोनो की ऋणी है।

गैर धार्मिक मूर्तिया

गांधार मूर्तिकला के तहत आम स्त्री पुरुषो पशुओ इत्यादि को भी स्थान दिया गया है। यहां पुरुष प्रतिमाओ को लम्बे चौड़े कदकाठी के साथ दिखलाया गया है जबकि स्त्री प्रतिमाए अत्यन्त कोमल खूबसूरत तथा आकर्षक बनी है। स्त्रीयो को मूर्तिकला मे अनेक दैनिक 'क्रियाओं जैसे- टोकरी लिए हुए, अंगूर के गुच्छो के साथ नृत्य एवं मदिरापान करते हुए दिखलाया गया है। मानव मूर्तियां भी यहा उतनी ही कलात्मक है जितनी की धार्मिक मूर्तिया।

मथुरा मूर्तिकला -

ईस्वी सन् शताब्दियों में गांधार के समकालीन मथुरा एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में अनेकानेक प्रतिमाओं का निर्माण हुआ जो लगभग 100 AD - 300 AD तक बनी है।

मथुरा कला के प्रमुख केंद्र - मथुरा, कंकालीटीला (मुख्यतः जैन मूर्तियां) केशवपुर जमालपुर कटरा आदि है।

मथुरा की मूर्ति निर्माण सामग्री - मथुरा कला के मूर्तियों का निर्माण मुख्यतः लालचलुआ पत्थर से किया गया है।

विषय एवं विशेषताएं

मथुरा का विषय गांधार से अधिक विविधतापूर्ण है। यहां हिंदू बौद्ध जैन तीनों प्रतिमाएं बनी है। साथ ही धर्मनिरपेक्ष मूर्तियों का भी निर्माण किया गया है।

धार्मिक विषय

हिंदू - हिंदू प्रतिमाओं में शिव कार्तिकेय दुर्गा पार्वती सप्तमातृकाएं सप्तमातृकाएं आदि बने है।

जैन - मथुरा से (विशेषत: कंकाली टीला से) अनेक जैन प्रतिमाएं भी मिली है। जैन मूर्तियां मुख्यत: आदिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी की बनी है। जैन मूर्तियां स्वतंत्र होने के साथ साथ आयागपट्ट (Stone Slab) पर भी बनी है।

बौद्ध - मथुरा केंद्र पर बुद्ध एवं बोधिसत्व प्रतिमाओं का निर्माण किया गया।

मथुरा के बुद्ध के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण

1. दाढ़ी एवं मूछों का अभाव
2. यहां बुद्ध के सिर के बाल घुंघराले नहीं बल्कि योगी की भाँति ऊँहे जटा रूप में दर्शाया गया है।
3. मथुरा के बुद्ध के वस्त्र कसे हुए दिखलाए गए है। ये गंधार की भाँति लटके हुए नहीं है।
4. मथुरा की बौद्ध प्रतिमाओं पर स्वदेशी एवं आध्यात्मिक प्रभाव अधिक है। यहां बुद्ध का आभा मण्डल दैवीय प्रभाव के साथ तथा अलंकृत दिखलाया गया है। यहां बौद्ध प्रतिमाओं पर आध्यात्मिक आदर्श का अतिरिक्त आरोपण है। यही कारण है कि मथुरा के बुद्ध को 'आदर्शवादी बुद्ध' कहा जाता है।

स्थानीय देवी देवता

मथुरा में भी गांधार की भाँति यक्ष-यक्षिणी, हरीति कुबेर आदि स्थानीय विश्वास से जुड़े देवी देवताओं की प्रतिमाएं बनी है।

धर्म निरपेक्ष

आम स्त्री-पुरुष - मथुरा मूर्तिकला में आम स्त्री-पुरुषों को भी स्थान दिया गया है यहां के पुरुषों को मंझोले कद एवं भारीभरकम शरीर के साथ दिखलाया गया है। जबकि स्त्रीयों को अत्यन्त सुन्दर कोमल तथा आकर्षक दिखाया गया है।

प्रश्न संख्या Question No.

ध्येय IAS most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें (Dont write anything in this margin)

शासकीय प्रतिमाएं मथुरा में कुषाणो द्वारा खुद की प्रतिमाएँ भी बनवायी गयी। यहां कुषाण शासको ने देवकुलों (मृत राजा रानी एवं पूर्वजों की प्रतिमा एवं मंदिर निर्माण) का निर्माण कराया। यहां से कुजुल कैड फीसस तथा कनिष्क प्रथम की सिर विहिन प्रतिमा प्राप्त हुई है। कनिष्क को लम्बा कोट पहने, हाथ में तलवार लिए हुए गदृदे दार एवं मोटा जूता पहने हुए दर्शाया गया है।

◉ अमरावती मूर्तिकला (100 BC - 500 AD)

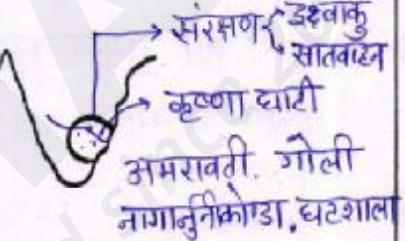

अमरावती कला का विकास भी मथुरा के समकालीन समय में कृष्णा घाटी के विभिन्न केंद्रो - अमरावती नागार्जुनीकोण्डा आदि के तहत लगभग 100 BC - 500 AD के बीच हुआ। यह कला इक्ष्वाकुओं तथा सातवाहनों के संरक्षण मे विकसित हुई।

निर्माण सामग्री - मूर्तियों का निर्माण बलुआ पत्थर (काफी कम) एवं संगमरमर (प्रमुखतया) से हुआ है।

विषय एवं विशेषताएं

अमरावती मे भी दोनो विषयों की मूर्तियां बनी है।

धार्मिक विषय - इनमे मुख्यत: बुद्ध तथा बोधिसत्व प्रतिमाएं बनी है। इनकी शैली मथुरा जैसी है। यहां पत्थरों के विभिन्न पाटिकाओं पर जातक कहानियों के शिल्प एवं बुद्ध तथा बोधिसत्व से जुड़ी घटनाओं को हीनयानी एवं महायानी दोनों परम्पराओं में शिल्प कला के माध्यम से दिखलाया गया।

गैर-धार्मिक विषय

अमरावती कला में गैर धार्मिक प्रतिमाओं के निर्माण पर भी काफी बल दिया गया है। मूर्तिकला के तहत लोक जीवन से संबंधित शिल्पों जैसे- राजा-रानियों राजकुमार राजकुमारियों राजमहल आदि के दृश्य एवं आम स्त्री-पुरुषों को मुख्य स्थान दिया गया है। यहां की स्त्री-प्रतिमाएं प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टि से काफी बेहतर बनायी गयी है। स्त्रीयों को कोमल काया, सुन्दर साज सज्जा लम्बी टांगो तथा छरहरा बदन के साथ दर्शाया गया है।

8. गांधार एवं मथुरा कला में तुलना कीजिए।

Ans
- सा० परिचय
- समानता
- असमानता
- निष्कर्ष ↓

समानता के बिन्दू

1. दोनों कलाओं में बौद्ध विषयों से संबंधित है। जिसके तहत बुद्ध एवं बोधिसत्व की प्रतिमाओं का निर्माण किया गया है।
2. स्थानीय एवं लोक विश्वास से संबंधित प्रतिमाओं - यक्ष यक्षिणी, हरीति कुबेर आदि की मूर्तियों का निर्माण
3. दोनों कला केंद्रों पर मानव जीवन के रोजमर्रा से संबंधित घटनाओं एवं स्त्री-पुरुषों को भी प्रतिमाशास्त्र में स्थान दिया गया है। स्त्री-पुरुषों को नृत्य-संगीत करते हुए सामूहिक वार्तालाप करते हुए दिखाया गया है।
4. दोनों में सामग्री के रूप में प्रस्तर को प्रमुख स्थान दिया गया है।

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything in this margin)

असमानता के बिन्दु

1. दोनो कलाओं के विषयों में अनेक असमानताएं है। गांधार के तहत केवल बुद्ध बोधिसत्व को प्रमुख स्थान दिया गया है। लेकिन मथुरा कला में बौद्ध जैन तथा हिन्दू तीनो विषयो को स्थान दिया गया है।

2. दोनो कलाकेन्द्रों के तहत बुद्ध एवं बोधिसत्व प्रतिमाओं के प्रतिमाशास्त्रीय लक्षणों मे अनेक अंतर है। Explain

3. दोनो कला केन्द्रो के तहत मूर्ति निर्माण मे प्रस्तुत सामग्रियों में अन्तर है। गांधार मे नीला धूसर शिष्ट पत्थर का अधिकतम प्रयोग किया गया है। जबकि मथुरा में लाल बलुआ पत्थर पर अधिक बल दिया गया है।

4. गांधार कला मे यूनानी रोमन देवी देवताओं की भी प्रतिमाए बनी है। हेलेना, अपोलो किन्तु मथुरा कला मे यह नगण्य है।

5. गांधार कला में शासकीय प्रतिमाओं की प्राप्ती नही होती है जबकि मथुरा कला मे कुषाण शासको द्वारा बनवाई गई देवकुल प्रतिमाए प्राप्त होती है।

गुप्तकालीन मूर्तिकला

मूर्तिया
- ब्राह्मण
- बौद्ध
- जैन

कलाकेंद्र (School)

मथुरा
[इस काल में भी जारी रही]

सारनाथ →
यहां गुप्तकाल में बुद्ध की अनेक प्रतिमाओ का निर्माण हुआ।
↓
सभी बौद्ध मूर्तियों में बेहतर है।

प्रतिमाशास्त्र में विशेष मूर्तियों एवं मुद्राओं का अध्ययन

बुद्ध प्रतिमाए-

गांधार मथुरा अमरावती सारनाथ में कई प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। इसमें 5 मुद्राए प्रमुख है।

1- **भूमि स्पर्श मुद्रा -** इसमें बुद्ध को पालथी मारे ध्यान की अवस्था में दिखलाया जाता है। दाहिने हाथ से वे भूमि स्पर्श करते हुए बनाए जाते है। बुद्ध के पीछे बोधि वृक्ष बना होता है। कभी-कभी बुद्ध प्रतिमाओं की तरफ दो स्त्री प्रतिमाओं को दौड़ती हुई मुद्रा दिखाया जाता है।

बुद्ध की यह मुद्रा एक बौद्ध कथानक से जुड़ी है। जिसके अनुसार जब बुद्ध बोधगया में ध्यानमग्न थे। तब 'मार' (काम -क्रियाओं के देवता) द्वारा उनके ध्यान को भंग करने की चेष्टा की गई। लेकिन बुद्ध विचलित नही हुए उन्होंने पृथ्वी को साक्षी मानकर अपनी शुचिता का प्रमाण दिया शिल्पियों ने इसी घटना को मूर्तियो में प्रमुख स्थान दिया है।

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything in this margin)

2. धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा - यह सारनाथ में बुद्ध के प्रथम धर्मोपदेश की घटना से जुड़ी है। इसमें बुद्ध को शिक्षा एवं उपदेश देते हुए दर्शाया जाता है। इसमें बुद्ध मूर्तियों के पीछे चक्र बना होता है। इस मुद्रा में बुद्ध दोनो हथेलियों की अंगुलियों को चक्राकार रूप में प्रदर्शित करते हुए बनाया जाता है।

3. ध्यान मुद्रा - यह मुद्रा बुद्ध के सम्बोधी ध्यान की मुद्रा है इसमें उन्हे पूर्ण ध्यान की अवस्था में दर्शाया जाता है। उन्हे अर्धनिमलित आखो नासाग्र दृष्टि के साथ दिखलाया जाता है। इसमें बुद्ध को पालथी मारे हुए दर्शाया जाता है उनका दोनो हाथ बीच में बना होता है।

4. अभय मुद्रा - यह मुद्रा बुद्ध की आशीष देती हुई मुद्रा है इसमें उन्हे संसार को अभयदान देते हुए दर्शाया जाता है। इसके तहत बुद्ध का दाहिना हाथ सामने की तरफ आशीष देते हुए दर्शाया जाता है।

5. वरद मुद्रा - यह भी बुद्ध की आशीष देती हुई मुद्रा है। कभी-2 इसमें बुद्ध का बाया हाथ नही बना होता है। जिसका अर्थ है कि बुद्ध क्षत-विक्षत होते हुए भी संसार के प्रति करूणामयी एवं कल्याणकारी है।

● नटराज शिव -

नटराज दो शब्दों नट एवं राज के मेल से बना है जिसका अर्थ है कलाओं पर राज करना। नटराज हिंदू देवता शिव को कहा जाता है। भारतीय परम्परा में शिव सर्वोच्च देवता एवं एक दैविय नर्तक के रूप में अभिकल्पित किये गए हैं।

माना जाता है कि संसार में गति एवं लय शिव के कारण ही बना रहता है। शिव को रौद्र एवं सौम्य दो रूपों में समझा जाता है। रौद्र रूप में वे (शिव) तांडव नृत्य करते हुए दर्शाए जाते हैं जबकि सौम्य रूप में वे लास्य नृत्य करते हुए दर्शाया जाता है।

प्रतिमाशास्त्रीय विशेषताएं

शिव की नटराज प्रतिमा नृत्य की मुद्रा में बनाए जाने वाली प्रतिमा है। जिसमें शिव को तांडव नृत्य करते हुए दर्शाया जाता है। शिव की नटराज प्रतिमाएं पत्थर एवं धातु दोनों से बनायी जाती रही हैं।

विशेष रूप से दक्षिण भारत में यह परम्परा काफी लोकप्रिय रही है इसके तहत शिव को ब्रह्माण्डीय नर्तक के रूप में दर्शाया जाता है।

नटराज शिव की प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण निम्न है।

शिव को चार भुजाओं के साथ नृत्य मुद्रा में प्रतीमा निर्माण किया जाता है विशेष भुजा का एक विशेष अर्थ है। जैसे –

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything in this margin)

- निचला बायां हाथ - मोक्ष की ओर
- उपरी बाया हाथ - अग्नी की लपटों की ओर इशारा करते हुए।
- निचला दाया - आशीष
- उपरी दाया - शिव डमरू लिए

शिव के योनो पैर भिन-2 मुद्रा में बने जैसे -

a. दाहिने पैर से शिव एक बौने को दबाए हुए दर्शाए जाते है। यह बौना दैत्य (अज्ञान) का प्रतीक होता है।

b. बाया पैर (शिव का) नृत्य मुद्रा में उपर की ओर उठा होता है।

नटराज प्रतिमा में अन्य लक्षण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है जैसे

a. सूर्य - शिव का अस्त्र
b. जरा - योग का प्रतीक
c. गंगा - मानव कल्याण का प्रतीक
d. अर्धचन्द्र - शांति का प्रतीक
e. कानकुण्डल - स्त्री पुरुष ऊर्जा का प्रतीक

शिव नटराज प्रतिमा चारों ओर से 'ॐ' की आकृति के अन्दर घेरे में बनाई जाती है। यह ब्रह्माण्डीय अग्नि की लपटों का प्रतीक होता है जिसे सृजन एवं विनाश दोनो रूपों में समझा जाता है।

• बांसुरी वादक कृष्ण

- हिंदू देवता
- कई रूपों में माने गए हैं :-

सभी रूपों में वासुरी बजाते हुए दर्शाए गए
- बालक कृष्ण
- मॉडल प्रेमी
- डिवाइन हिरो
- विष्णु के अवतार
- सर्वोच्च देवता

संगीत मूर्ति चित्र लोककला

कृष्ण हिंदुओं के प्रमुख देवता हैं इन्हे विष्णु का अवतार माना गया है जो बालक कृष्ण - अनुकरणीय प्रेमी, दैवीय हिरो सर्वोच्च देवता आदि विभिन्न रूपों में दर्शाये जाते है। कृष्ण को उनके सभी रूपों में बांसुरी बजाते हुए दिखलाया जाता है। ऐसे बासुरी वादक कृष्ण भारतीय कला के सभी प्रमुख क्षेत्रों (संगीत चित्र मूर्ती नृत्य नाटक आदि) में एक प्रमुख विषय के रूप में दर्शाए जाते है।

संगीत कला में बासुरी वादक कृष्ण को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी बासुरी की आवाज संगीत की मधुर ध्वनि में गिनी जाती है। कृष्ण बासुरी के "सातोद्विद्रो" से संगीत के सातों धनो को उत्पन्न माना जाता है।

चित्रकला मे भी बांसुरी वादक कृष्ण विषय अत्यन्त प्रमुख है। राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला मे इसे विशेष स्थान दिया गया है। चित्रकला मे कृष्ण को बांसुरी बजाते हुए मनोरम प्राकृतिक, दृश्यो आम ग्रामीणों गोपीयों तथा जानवरों के साथ चित्रित किया जाता है।

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything
in this margin)

मूर्तिकला कला में भी बांसुरी वादक कृष्ण विषय अत्यंत लोकप्रिय है। कृष्ण की धातु एवं प्रस्तर दोनों सामग्रियों से प्रतिमाएं बनाने की एक लम्बी परिपाटी रही है जिसे आज भी मूर्तिकला के तहत देखा जा सकता है

भारतीय नृत्य नाटक परंपरा में कृष्ण विषय का मंचन एक लम्बे समय से होता रहा है (वर्तमान में भी विशेष धार्मिक आयोजनों, उत्सवों आदि में कृष्ण को वासुरी के साथ नृत्य एवं नाटक करते हुए प्रदर्शित किया जाता है।

वासुरी वादक कृष्ण लोककला के भी महत्वपूर्ण विषय हैं। कृष्ण का एक वर्णन चरवाहा कृष्ण के रूप में भी मिलता है जो गायों के समीप वासुरी बजाते हुए प्रदर्शित किए जाते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय कला एवं संस्कृति में बांसुरी वादक कृष्ण अत्यंत लोकप्रिय है इसकी लोकप्रियता केवल हिंदू धर्म तक ही सीमित नहीं है बल्कि मुस्लिमों (इस्लाम) तथा ईसाईयत को मानने वाले भी कृष्ण के प्रति श्रद्धा रखते हैं। विदेशियों में भी देखी जा सकती है।

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

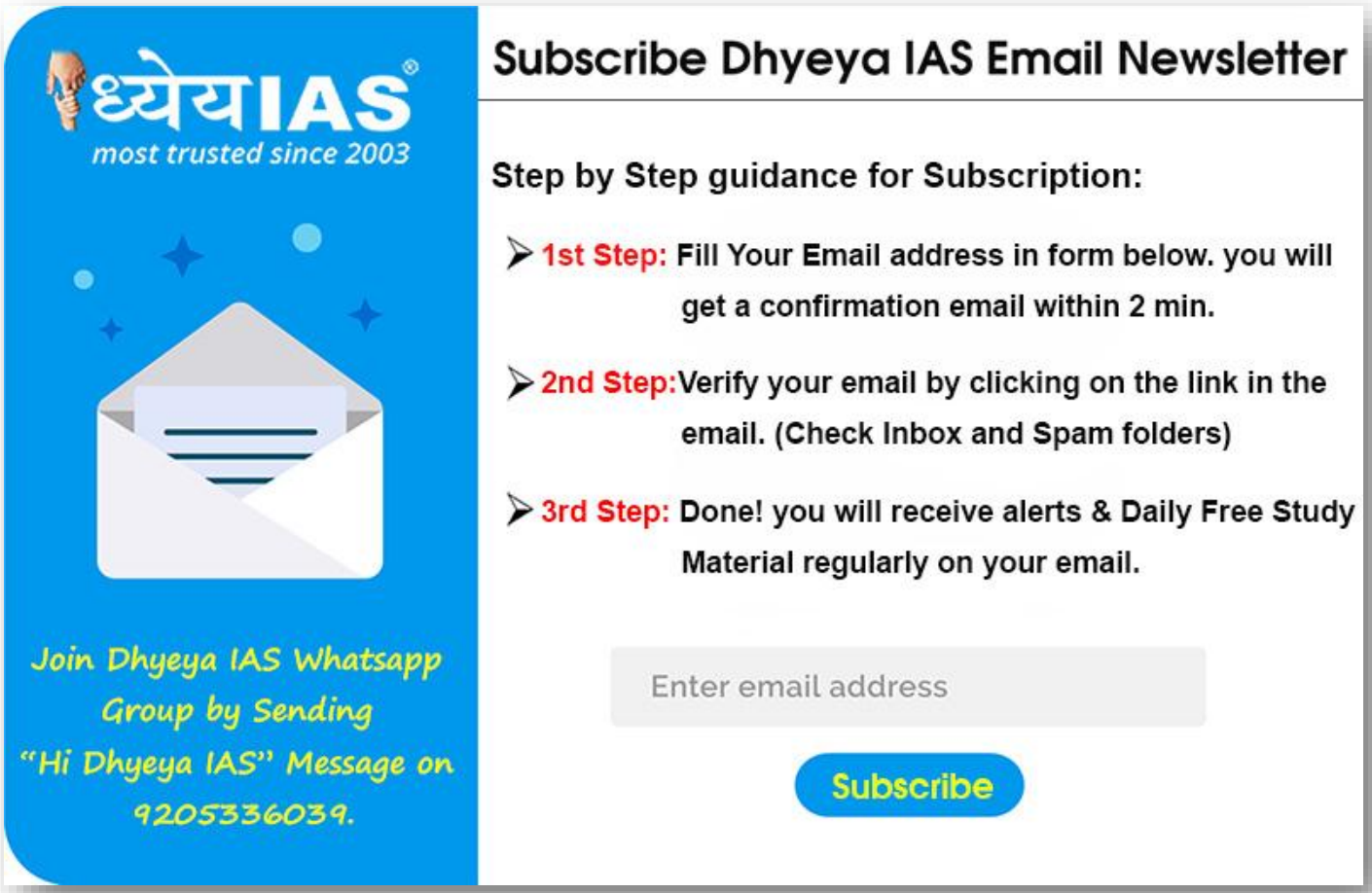

ध्येय IAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए 9355174442 पर "Hi Dhyeya IAS" लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400